दैनिक भास्कर की बिहार में उपस्थिति

शोध सारांश-

प्रस्तुत शोध कार्य में दैनिक भास्कर समाचार पत्र की बिहार में उपस्थिति का अध्ययन किया गया है। कोई भी समाचार पत्र प्रतिजिन की घटनाओं को निष्पक्ष तरीके से प्रकाशित करने का कार्य करता है। ये खबरें जन सरोकार के मुद्दे से भी जुड़े होते हैं साथ ही समाचार पत्र जनता और सत्ता के मध्य सेतु का कार्य भी करता है। पत्रकारिता, क्रांति नहीं लाती यह अपने समय का दस्तावेज है अर्थात् रोज का जीवंत इतिहास। देखने वाले के अनुसार सच के अनेक पक्ष हो सकते हैं, परंतु तथ्यों के कई रूप नहीं होते यह वस्तुनिष्ठ होता है। कोई भी अखबार या मीडिया हाउस ईमानदारी से अपने समय के अधिकाधिक तथ्य दर्ज करे, पत्रकारिता का मूल धर्म बस इतना ही है। बशर्ते इन तथ्यों के संकलन में किसे रखना है और किसे छोड़ देना इसका निर्णय वह बिना किसी पूर्वाग्रह से करता हो। बिना लाग-लपेट के ईमानदारी से समाचार पत्र और पत्रकार यही करें, तो निश्चित मानिए, देर-सबेर सूरते हाल बदल जाएगा । किसी भी समाचार पत्र और पत्रकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि किसी भी अड़चन के बावजूद वो इन रास्तों पर चले।

पूरी मीडिया के सामने आज गंभीर चुनौतियां हैं। इन सवालों पर सार्वजनिक चर्चा जरूरी है। इसके साथ ही समाज और पाठकों का सार्थक हस्तक्षेप भी इन मुद्दों को लेकर होना चाहिए। यह स्पष्ट बात है कि बिना आमदनी, व्यवसाय या कारोबार के मीडिया या कोई व्यवसाय नहीं चल सकता। अखबार के प्रबंधनकीय सहयोग के बगैर पत्रकारिता सही धर्म नहीं निभा सकती। पूरे देश में अनेक टीवी चैनल्स या अखबार घराने अपनी गुणवत्ता, निष्पक्षता, पारदर्शिता के आधार पर विज्ञापन व्यवसाय करते हैं और साथ ही बेहतर एवं उच्चस्तरीय पत्रकारिता भी।

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य - दैनिक भास्कर 2014 से बिहार में प्रकाशित हो रहा है। तब से अब तक समाज एवं राज्य के कई ऐसे मुद्दे रहे होंगे जिनपर मीडिया रिपोर्ट्स और खबरों का खासा असर देखने को मिला होगा। ऐसे में बिहार की जनता ने राज्य के अन्य महत्वपूर्ण अखबारों के समक्ष दैनिक भास्कर की पत्रकारिता को कैसा पाया,प्रस्तुत शोध में यह जानने की कोशिश की गयी है। बिहार में हिन्दी भाषा में कई पत्र –पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं जिनमें दैनिक अखबारों में प्रसार संख्या के आधार पर हिन्दुस्तान, दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर और प्रभात खबर महत्वपूर्ण हैं। सभी अखबारों का पटना संस्करण बिहार राज्य के अन्य संस्करणों से ज्यादा महत्वपूर्ण होता हैं। इस शोध में बिहार

के पटना जिले में दैनिक भास्कर की उपस्थिति की पड़ताल की गयी है। शोध के लिए पटना जिला को आधार बनाने के पीछे उद्देश्य पटना जिले की विशाल और विविधतायुक्त जनसंख्या है। पटना जिला बिहार की राजधानी होने के कारण राज्य की राजनीतिक गतिविधियों का भी केंद्र है। अन्य जिलों की तुलना में इसका साक्षरता दर भी उच्च है।

प्रस्तुत शोध का प्रथम अध्याय शोध निरूपण है। इसके अंतर्गत शोध कार्य को सम्पादित करने के लिए शोध परिचय, साहित्य पुनरावलोकन, उपकल्पना, शोध समस्या, शोध उद्देश्य, शोध का महत्व एवं प्रासंगिकता, शोध का क्षेत्र एवं सीमाएं एवं शोध प्रविधि को लिखा गया है। इस अध्याय में आधारभूत शोध के सिद्धांतों एवं जनसंचार शोध की प्रक्रिया को समझते हुए शोध विषय के निरूपण की प्रक्रिया को लिखा गया है। लघु शोध ग्रंथ के पांच अध्यायों में शोध समपन्न हुआ है।

प्रस्तुत शोध प्रश्नावली, चयनित खबरों का अंतर्वस्तु विश्लेषण, अवलोकन एवं प्रसार संख्या आदि से जुड़े आकड़ों के आधार पर विश्लेषित किया गया है। समाचार पत्र पाठकों से प्रश्नावली के माध्यम से दैनिक भास्कर की बिहार में उपस्थिति से जड़े तमाम पहलुओं पर प्रश्न पूछे गये हैं। इस प्रकार बिहार में दैनिक भास्कर की उपस्थिति का विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध में मात्रात्मक तथा गुणात्मक दोनों शोध प्रविधि का इस्तेमाल किया गया है। प्रश्नावली भरवाने के लिए निदर्शन का आकार 100 रखा गया है। सभी प्रश्नावली को पटना के शहरी क्षेत्र में भरवाया गया है। अंतर्वस्तु विश्लेषण दैनिक भास्कर के पटना संस्करण के चयनित खबरों का किया गया है।

शोध कार्य के पश्चात निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं।

- 61 प्रतिशत पाठक यह मानते है कि दैनिक भास्कर सत्ता और शासन की खबरों को निष्पक्षता से प्रकाशित करता है।
- बिहार सरकार ने 2001-2007 के मध्य विज्ञापन पर लगभग 22 करोड़ खर्च किये जबकि 2007-12 के मध्य यह खर्च बढ़कर लगभग 141 करोड़ हो गया था। इन्ही अवसरों का शीघ्रता से लाभ लेने के लिए दैनिक भास्कर 2013 से बिहार आने की तैयारी शुरू करता है और 2014 में पटना संस्करण लॉन्च करता है।
- दैनिक भास्कर स्थानीयता एवं क्षेत्रीयता की अवधारणा पर कार्य करता है। बड़ी-बड़ी कॉरपोरेट कंपनियाँ अपने उपभोक्ता उत्पादों को लेकर छह लाख 78 हज़ार गाँवों को अपना निशाना बना रही है। ऐसे में

अख़बार को गाँव तक पहुँचने से कौन रोक सकता है। आखिरकर अखबार भी इसी कॉरपोरेट का ही एक उपक्रम है।

- 'हेडलाइंस फ्रॉम हिंदी हार्टलैंड' पुस्तक में लेखिका शैवंती नाइनन का कहना है कि हिंदी अख़बारों ने राष्ट्रीय मिथक को तोड़कर समाचारों को बेहद स्थानीय बना दिया है। दैनिक भास्कर द्वारा स्थानीय खबरों की प्रमुखता और पाठकों की रूचि खबरों की क्षेत्रीयता के सिद्धांत को स्थापित करती है।
- दैनिक भास्कर जनसरोकार से जुड़े स्थानीय संघर्ष की खबरों को अपने अखबार में जगह देता है, 46 प्रतिशत पाठक ऐसा मानते हैं। जबकि 52 प्रतिशत पाठकों का मानना है कि कभी-कभी ही दैनिक भास्कर में ऐसी खबरों को जगह मिलती है।
- 69 प्रतिशत लोगों ने माना कि दैनिक भास्कर अपनी खबरों में समाज के सभी वर्ग को समान स्थान देता है।
- दैनिक भास्कर की खबरों के अंतर्वस्तु विश्लेषण से ज्ञात होता है कि "मंडे नो निगेटिव" में दो से तीन खबरें प्रकाशित की जाती हैं। इन खबरों की प्रकृति की अन्य अकबारों प्रकाशित सॉफ्ट स्टोरी के समान ही है।
- दैनिक भास्कर ने बहुत कम समय में अपनी स्थिति मजबूत कर ली है। बिहार के तीन बड़े अखबार दैनिक जागरण, दैनिक हिन्दुस्तान और प्रभात खबर के समकक्ष आज दैनिक भास्कर खड़ा है। दैनिक भास्कर ने बिहार में तीनों अखबार के पाठकों को अपनी तरफ आकर्षित किया है। उत्तरदाताओं में से 53 प्रतिशत हिन्दुस्तान समाचार पत्र के पूर्व पाठक थे जबकि 30 प्रतिशत पहले दैनिक जागरण अखबार पढ़ते थे। प्रभात खबर अखबार पढ़ने वाले 13 प्रतिशत पाठक अब दैनिक भास्कर के पाठक हैं।